# मातृत्व

(उपन्यास)

# मातृत्व

## (उपन्यास)

● गणेश पुरोहित

समदर्शी प्रकाशन
नव-सृजन के नवीन पृष्ठ...
335, देव नगर, मोदीपुरम, मेरठ, उत्तर प्रदेश-250110

इस पुस्तक का कोई भी अंश, कहीं पर भी, बिना लेखक
की अनुमति के उद्धृत नहीं किया जाना चाहिए।

ISBN : 978-93-88049-75-7

सर्वाधिकार © : गणेश पुरोहित
मंगलम कार बाजार, की गली
भंडारी बावरी, लाल बाग, नाथद्वारा
राजस्थान, जिला राजसमंद

मूल्य : ₹ 175/-

प्रथम संस्करण : जनवरी 2020

प्रकाशक : समदर्शी प्रकाशन,
335, देवनगर, मोदीपुरम
मेरठ, उत्तर प्रदेश-250110
मोबाइल नंः 9599323508
Website: www.samdarshiprakashan.com
Email: samdarshi.prakashan@gmail.com

आवरण : समदर्शी

मुद्रक : थॉमसन प्रेस

---

Matritv Novel written By- Ganesh Purohit Rs. 175/-

समर्पित है-
अम्बर से ऊँची,
सागर से गहरी माँ को,
जो जीवन देती है,
जीना सिखाती है,
हर मोड़ पर सम्बल बन
कर खड़ी रहती है।

# प्राक्कथन

मातृत्व-प्रकृति द्वारा स्त्री को दिया गया अनुपम वरदान है, जिसे पा कर वह अभिभूत हो जाती है। नौ माह तक गर्भस्थ शिशु का भार ढ़ोने और उसे संसार में लाने के पूर्व जो पीड़ा सहनी पड़ती है, उसे क्षणभर में ही भूल जाती है। अपनी कृति को जब पहली बार आँखों से देखती है तब उसके चेहरे पर आनन्द की जो अद्‌भुत छटा बिखरती है, वह बहुत ही मोहक होती है। उसका रोम-रोम पुलकित हो जाता है। वह अपने आपको संसार की सब से भाग्यशाली माँ मानती है। और जब वह अपनी रचना को पहली बार छाती से लगाती है तब भीतर से जो ममत्व की धारा फूटती है, उसका वर्णन शब्दों से करना सम्भव नहीं है।

किन्तु दुष्कर्म के परिणाम स्वरूप मिला मातृत्व स्त्री के लिए वरदान की जगह अभिशाप बन जाता है। दुष्कर्म स्त्रीत्व को रौंद कर उसकी आत्मा को छलनी कर देता है, प्रकृति प्रदत कोख को लज्जित और अपमानित करता है। पुरुष द्वारा किया गया घृणित और धिनौना कृत्य उसकी विकृत मनःस्थिति को दर्शाता है, जो यह साबित करता है कि स्त्री मात्र भोग्या है और उसकी मांसल देह उपभोग की वस्तु है। जबकि स्त्री पुरुष में पिता और भाई की छवि देखती है और उसके कोमल मन के भावों में उनके प्रति श्रद्धा और विश्वास की झलक दिखाई देती है। विड़म्बना यह है कि दुष्कर्म करने वाला अपराधी समाज में कहीं छुप जाता है और निरपराध स्त्री उसके पाप को ढो कर अपराधी बन जाती है। प्रायः ऐसे पाप को नष्ट कर दिया जाता है और यदि किसी कारण से उस बच्चे को जन्म देने की यातना भोगनी पड़ती है, तो वह माँ अपने मातृत्व को कुचल कर उस संतति को त्याग देती है। सामाजिक प्रताड़ना को सह कर उसको अपनाने का जोख़िम वह नहीं लेना चाहती।

उपन्यास मातृत्व की प्रमुख पात्र एक अनाथ स्त्री है, जो परिवार उसे आश्रय

देता है वही अपने घृणित स्वार्थ की पूर्ति के लिए एक दरिंदे के साथ उसका दुष्कर्म करवाता है। क्योंकि वह अबला है, अशक्त है, उस पर अपने परिजन का सुदृढ़ आवरण नहीं है, इसलिए उसे कलंकिनी बना कर प्रताड़ित किया जाता है। उसकी आवाज़ सुनी नहीं जाती। सच को दबा दिया जाता है। फलतः ऐसा अपराध, जो उसने किया ही नहीं है, उससे मुक्ति पाने के लिए उसे आत्महत्या करने के लिए विवश होना पड़ता है।

आत्महत्या कर जीवन समाप्त करने का उपक्रम उस समय निष्फल हो जाता है जब श्रेष्ठतम मानवीय गुणों से ओतप्रोत देवतुल्य व्यक्तित्व न केवल उसका जीवन बचाते हैं, वरन् उसे समझाते हैं कि स्त्री योनी में जन्म लिया है इसका मतलब यह नहीं है कि जो अपराध तुमने किया ही नहीं उसकी सज़ा अपने आपको दो। अपने आत्मबल और अथक परिश्रम से सबल, सक्षम और प्रतिष्ठित बनो, ताकि नज़रें झुका कर नहीं, उठा कर जी सको। यह दुनियाँ बहुत मतलबी है, उन्हें रौंदती है जो दुर्बल और असहाय है। उसे मिली नसीहतों से उसका जीवन बदल गया। उसे एक अनचाहे बच्चे को जन्म देने की विवशता भी भोगनी पड़ी, जिसके प्रति उसके मन में घृणा भरी हुई थी। कुछ दिनों बाद उस बच्चे के प्रति उसके मन में अनुराग फूट पड़ा, क्योंकि जो कुछ हुआ उसमें उस अबोध का कोई दोष नहीं था। उस बच्चे को अनाथ बना कर त्यागने के बजाय उसकी माँ और पिता दोनों बन कर उसकी अच्छी परवरिश की। उसे उच्च शिक्षा दिलाई। परिस्थितियाँ ऐसी बनी कि उसे अपने बच्चे को उस समाज को सुधारने के लिए समर्पित करना पड़ा, जिसने उसे प्रताड़ित किया था। अंततः उसका पाप पुण्य में बदल गया। वह बच्चा जो उसका दुर्भाग्य बन कर कोख में आया था, सौभाग्य बन कर दुनियाँ से कूच कर गया।

वस्तुतः मातृत्व एक तपस्या है। हम यदि उसके तप का क्षणांश भी आदर करते तो नारी पुरुष के लिए मात्र भोग्या नहीं, सदैव श्रद्धा का पात्र बनती। उसका मांसल सौंदर्य सिर्फ़ उपभोग की वस्तु नहीं, जीवन को सँवारने का सम्बल बन जाता। पुरुष हो कर भी नारी मन की अथाह गहराई में उतर कर उसको पढ़ने की क्षुद्र कोशिश इस पुस्तक में की गई है। आपको मेरा प्रयास पसंद आया हो तो अपनी प्रतिक्रिया अवश्य प्रेषित करें।

निवेदकः

**-गणेश पुरोहित**

gpurohit56@gmail.com

## एक :

आकाश में उत्पात मचा रही घनघोर घटाएँ। पवन के तीव्र वेग से वर्षा ने रौद्र रूप धारण कर लिया था। सचमुच आज वह कहर ढा रही थी। सिर से टकरा रही बड़ी-बड़ी बूँदों का प्रहार इतना तीव्र था, जैसे आकाश से छोटे-छोटे कंकर बरस रहे हों। वह पूरी भीग गई थी। गीले बालों से पानी टपक रहा था। ठंड से उसके पूरे शरीर में कपकपी छूट रही थी। रेलवे ट्रेक के ऊपर बहते पानी में वह सम्भल-सम्भल कर पाँव रख रही थी। कई बार गिरते-गिरते बची थी, क्योंकि तूफ़ानी अंधेरी बरसाती रात थी और उसे कुछ भी स्पष्ट नहीं दिखाई दे रहा था। दूर उफ़नती नदी का शोर अब उसे स्पष्ट सुनाई देने लगा था। नदी पर बना रेलवे पुल उसका गन्तव्य स्थान था, जहाँ पहुँच कर उसे नदी में छलांग लगा कर अपनी जीवन ज्योति बुझानी थी। मन ही मन वह अपने अविवेकपूर्ण निर्णय पर पछता रही थी। उसका मानसिक द्वंद्व उसे बराबर विचलित और व्यथित कर रहा था।

यकायक आकाश में तीव्र गर्जना हुई। बिजली चमकी और कुछ पल के लिए उसे उफ़नती नदी के पानी की क्षणिक झलक दिखाई दी। उसे थोड़ी राहत मिली, क्योंकि वह नदी के बिल्कुल समीप आ गई थी। ...बस कुछ पलों का जीवन बचा है... फिर सब कुछ ख़त्म। ...साँसे टूट जायेंगी। ...धड़कन रुक जायेंगी। ...मस्तिष्क सोचना बंद कर देगा। ...आँखें बंद होते ही जीवन यात्रा पूरी हो जायगी। ...सारे

सांसारिक बंधनों से छुटकारा मिल जायेगा। ...घृणित दुनिया से विदाई हो जायेगी। ...और प्राण पंछी के उड़ते ही सारे दुःखों का अंत हो जायेगा। जीवन यात्रा को समाप्त करने के निर्णय पर उसके मन में पश्चाताप नहीं था, किन्तु परिस्थितियाँ ऐसी प्रतिकूल हो जायेंगी, इसका उसे अंदेशा नहीं था।

वह सहसा चौंक गई और भय से चीखते हुए कंकरीट से फिसलते हुए नीचे गिर गई। अभी-अभी उसके पांवों पर हो कर सर्प गुजरा था, परन्तु उसने काटा नहीं था। ...वह बुदबुदायी- मूर्ख! तुम सहर्ष मृत्यु का वरण करने जा रही हो, फिर मृत्यु से भय कैसा! जबकि मृत्यु ही तो सब से बड़ा भय है। अब उठो... जल्दी करो, वरना यहाँ कभी भी, कुछ भी घटित हो सकता है। वह फिर रेलवे ट्रेक के नीचे बिछी कंकरीट पर चढ़कर ट्रेक पर आ गई। उसने भयमिश्रित कौतुहल से सांप को ढूँढ़ने की कोशिश की। ...वह सोचने लगी- अच्छा हो, सांप यहीं कहीं हो, वह उस पर पाँव रख दे और वह उसे डस ले। यदि ऐसा सम्भव हुआ तो उसे नदी में छलांग लगाने का जोखिम नहीं उठाना पड़ेगा। ...थोड़ी देर तड़फेगी, फिर सांस टूट जायेगी। उसकी मृत देह निर्जन जंगल में पड़ी रहेगी। उसे जानवर नोच के खा जायेंगे ...वह अपने आप पर क्रुद्ध हो, बुदबुदायी- तुम पागल हो गई हो! -यह सब सोच कर तुम्हें क्या करना है? जब तुम इस देह से मुक्ति चाहती हो, फिर इससे इतना मोह क्यों है? ...सांप ढूँढ़ो...यहीं कहीं होगा। उसे कहीं सांप दिखा वह सहसा चौंक गई और भय से चीखते हुए कंकरीट से फिसलते हुए नीचे गिर गई। ...यदि मैं भयभीत हो कर चीखती नहीं और उसके फन पर ही पाँव रख लेती तो निश्चित रूप से सांप मेरे शरीर में ज़हर उड़ेल देता, किन्तु मस्तिष्क की तंत्रिकाओं को कहाँ यह स्वीकार था। वह तो आसन्न खतरे को देख कर आगाह कर देती है। इसलिए पाँव पीछे हट गये और मुँह से चीख निकल गयी। ...तुम्हारे मन का उद्वेग मृत्यु को गले लगाना चाहता है, मस्तिष्क की तंत्रिकाएं नहीं। ...मानव शरीर की जटिलताओं को तुम क्या समझोगी, क्योंकि तुम बुद्धिमान मूर्ख हो! ...वह अपने आपको समझाते हुए बुदबुदायी- ऐसी परिस्थितियों में मस्तिष्क को ज्यादा सक्रिय रखना उचित नहीं होगा। ...विचारों को विराम दो और आगे बढ़ो।

वह धीरे-धीरे चलती हुई पुल के समीप आ गई। कंकरीट से फिसल कर नीचे गिरने से उसकी चप्पल टूट गई थी और चलने में दुविधा हो रही थी। उसने क्रोध से दोनों चप्पलें खोलीं और नदी में फैंक दीं, किन्तु उसे छप्प की आवाज नहीं सुनाई दी।... क्या पता मैं भी पानी में ऐसे ही ... किन्तु, परन्तु में उलझी रहोगी, तो मौत आयेगी ही नहीं। ...जब मौत आयेगी नहीं, तो तुम इस देह को कहाँ ले जाओगी..... कहाँ छुपाओगी इसे? ... तुम्हें मालूम है- संसार में तुम्हारा कोई नहीं है, सभी तुम्हारी इस सुंदर काया के दुश्मन हैं। ...फिर बार-बार इस जीवन के प्रति तुम्हारे मन में

इतना मोह क्यों उमड़ आता है?

अब वह रेलवे पुल पर आ गई। परन्तु छलांग लगाने के पहले कुछ सोच में पड़ गई। वह नीचे बैठ गई। घुटनों में मुँह छुपा जीवन के अंतिम पलों का जी भर कर लुत्फ उठाने लगी। उसका सारा भय काफूर हो गया। मन में उठ रहे विचारों का द्वंद्व शांत हो गया। यकायक जीवन के अंतिम पल उसे बहुत सुखद अहसास करा रहे थे। ...वे स्मृतियाँ याद आने लगीं जब वह बहुत खुल कर हँसी थी। ...उसके जीवन में उल्लास था, उमंग थी, जब उसके माता-पिता जीवित थे।...उसे छोड़ कर वे एक साथ दुनिया से चले गये। ममत्व भरे माता-पिता के चेहरे स्मृति पटल पर तैरने लगे। मीठी-मीठी यादें गुदगुदाने लगीं-क्यों चले गये, वे इतनी जल्दी? मुझे साथ ले जाते... उस दिन वे स्कूल से उसे लेने आ रहे थे... मुझे कार में बिठा लेते, फिर एक्सीडेंट होता... तो मैं भी उनके साथ ही... वह सुबकने लगी। ...माता-पिता के जाने के बाद उसके जीवन में अंधेरा छा गया। उसके मासूम चेहरे पर हमेशा उदासी छायी रहती। वह कभी खुल कर नहीं हँसी। अपने आप में खोई गुमसुम और उदास रहने लगी।... उसे फिर एक-एक कर छोटे से जीवन में घटित घटनाक्रम याद आने लगा। देर तक पुरानी यादों में खोई वह उसी तरह बैठी रही। कभी खिलखिलाती... कभी सुबकते हुए बुदबुदाती... न चाहते हुए भी जीवन का मोह छूट नहीं रहा था।

कहीं से उसे लक्ष्य कर उस पर टार्च का तेज प्रकाश फैंका गया था। गहन अंधकार में रोशनी का अहसास पा वह भय से कांप उठी। टार्च बंद हो गई। फिर वैसा ही गहन अंधकार छितरा गया। किन्तु इस आकस्मिक घटना ने उसे भीतर तक हिला कर रख दिया। भयभीत हो उसने इधर-उधर नजर दौड़ाई, पर उसे कहीं कुछ भी नहीं दिखाई दिया। सिर उठा कर आकाश की ओर देखा-शायद फिर बिजली चमकी हो, परन्तु ऐसा भी नहीं था-आसमान घटाओं से भरा था और पानी की बौछारों का वेग बढ़ता जा रहा था। ...उसने अपने आपको डांटते हुए चेतावनी भरे लहजे में कहा -अब हिम्मत करो और उठो! ...यादों के जंजाल में उलझी रही तो सुबह हो जायेगी और तुम यहीं बैठी रहोगी।... उसने घुटनों में से सिर उठाया और डबड़बाई आंखों से पानी के वेग को देखने लगी। उसे सिर्फ पानी की मचलती हुई लहरों का शोर सुनाई दे रहा था, किन्तु अंधेरे में कुछ भी स्पष्ट नहीं दिखाई दे रहा था। वह उठी। आँखें बंद कर उसने ईश्वर का ध्यान किया, जिसके अस्तित्व को वह स्वीकार नहीं करती थी, किन्तु स्मरण करना भूल नहीं पाई।

जैसे ही उसने छलांग लगाने का साहस जुटाया, यकायक उसकी बांह किन्हीं मजबूत हाथों ने पकड़ ली और आगन्तुक उसे पूरी ताकत से खींच कर रेलवे पुल से बाहर ले आया। वह चीखे -चिल्लाये उसके पहले ही उसे दुबारा खींच कर ट्रेक के नीचे बिछी कंकरीट से कीचड़ युक्त जमीन पर एक तरह से पटक ही दिया। इस

आकस्मिक और अप्रत्याशित घटना की सम्भावना उसे नहीं थी। उसे तेज सांसे चलने का स्वर सुनाई दिया। उसे अहसास हुआ- निश्चित रूप से वह किसी दो पैर के जानवर के चंगुल में फँस गई है। ...यह जानवर उसे नोंच लेगा। ...भय से हाँफते हुए वह चीख उठी- ''कौन हो तुम? ...क्या चाहते हो मुझ से?''

उसके प्रश्न का उसे उत्तर नहीं मिला, क्योंकि जिनसे प्रश्न किया गया था, वे जमींन पर रखी हुई कोई वस्तु ढूँढ़ रहे थे। वह वस्तु टार्च थी, जिसके मिलते ही तेज प्रकाश उसके चेहरे पर डाला। उसकी आँखें चुंधिया गई। उसने रोशनी के आगे अपना एक हाथ कर उस शख़्स की ओर देखने लगी, जिसने उसके लक्ष्य को बाधित कर दिया था। उसे एक शांत किन्तु गम्भीर स्वर सुनाई दिया- ''थोड़ी सी देरी हो जाती, तो शायद तुम अब तक इस संसार से कूच कर जाती। ...अज़ीब संयोग है- ईश्वर ने मुझे शायद तुम्हारा जीवन बचाने ही भेजा है, अन्यथा इस अंधेरी बरसाती रात में भला मैं यहाँ क्यों आता! ...कुछ देर रुकने के बाद वे फिर बोलने लगे-''मेरे आश्रम की गाय जंगल से नहीं लौटी थी, जिसे ढूँढ़ने मैंने सेवक को भेजा, किन्तु बहुत देर तक इंतजार करने पर जब वे दोनो नहीं आये, तो मैं उन्हें ढूँढ़ने यहाँ आया।... अचानक इस रात्रि के नीरव सन्नाटे में जहाँ बरसात और नदी के पानी का शोर था, एक स्त्री की चीख़ सुनाई दी। मैं वहीं ठहर गया। फिर मैं उसी दिशा में आगे बढ़ने लगा, जिधर से मुझे चीख़ सुनाई दी थी। नदी पर बने रेलवे पुल के पास आकर मैंने टार्च की रोशनी उस तरफ फैंकी, जहाँ मैंने एक युवती को संदेहास्पद स्थिति में खड़े हुए पाया। मुझे तुरन्त उसका इरादा समझ में आ गया। तत्क्षण मैंने टार्च बंद कर नीचे पटक दी और तेजी से रेलवे पुल की ओर बढ़ा... और पूरी ताकत लगाकर तुम्हें यहाँ तक खींच लाया।... मैं यदि तुरन्त टार्च बंद नहीं करता, तो तुम निश्चित रूप से नदी में कूद जातीं।''


पूरी पुस्तक पढ़ने के लिए अभी ऑर्डर करें

पेपर बैक - 150 रुपये

ईबुक- 50 रुपये

Purchase from

Samdarshiprakashan.com